अस्तु, श्रीभगवान् परमात्मारूप से सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों में हैं। श्रीमद्भागवत में उपरोक्त तीनों पुरुषावतारों का वर्णन उपलब्ध है। "श्रीभगवान् इस प्राकृत सृष्टि में कारणोदकशायी विष्णु, गर्भोदकशायी विष्णु और क्षीरोदकशायी विष्णु नामक तीन अवतार लेते हैं।" परमेश्वर श्रीकृष्ण, जो सब कारणों के परम कारण हैं, महाविष्णु अथवा कारणोदकशायी विष्णु के रूप में कारणार्णव में लेटकर अपने निश्वास के साथ सृष्टि को प्रकट करते हैं; इसलिए वे ही इस सृष्टि के आदिकारण, पालनकर्ता तथा सम्पूर्ण शक्ति के अन्तिम आश्रय हैं।

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी।।२१।।

आदित्यानाम्=अदिति के बारह पुत्रों में; **अहम्**=मैं; **विष्णुः**=परमेश्वर विष्णु हूँ; **ज्योतिषाम्**=ज्योतियों में; **रविः**=सूर्य; **अंशुमान्**=जाज्वल्यमान (किरणमाली); **मरीचिः**=मरीचि; **मरुताम्**=मरुद्गुणों में; **अस्मि**=मैं हूँ; **नक्षत्राणाम्**=नक्षत्रों में; **अहम्**=मैं; **शशी**=सुधावर्षी चन्द्रमा (हूँ)।

अनुवाद

अदिति के बारह पुत्रों में मैं विष्णु हूँ और ज्योतियों में किरणमाली सूर्य हूँ, तथा मरुद्गणों में मरीचि और नक्षत्रों में चन्द्रमा मैं हूँ।।२१।।

तात्पर्य

बारह आदित्यों में प्रधान होने से विष्णु श्रीकृष्ण के रूप हैं। आकाश की ज्योतियों में सूर्य मुख्य है। 'ब्रह्मसंहिता' में सूर्य को श्रीभगवान् का अशेष तेज और नेत्र रूप कहा गया है। मरीचि मरुद्गणों के अधीश्वर हैं। नक्षत्रों के मध्य यामिनी में चन्द्रमा का आधिपत्य रहता है; अतः वह श्रीकृष्ण का रूप हैं।

वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः।
इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना।।२२।।

वेदानाम्=वेदों में; **सामवेदः**=सामवेद; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **देवानाम्**=समस्त देवताओं में; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **वासवः**=स्वर्ग का राजा इन्द्र; **इन्द्रियाणाम्**=सब इन्द्रियों में; **मनः**=मन; **च**=भी; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **भूतानाम्**=सम्पूर्ण जीवों में; **अस्मि**=(मैं) हूँ; **चेतना**=जीवन-शक्ति।

अनुवाद

मैं वेदों में सामवेद हूँ; देवताओं में इन्द्र हूँ; इन्द्रियों में मन हूँ और जीवों में चेतना हूँ।।२२।।

तात्पर्य

जड़ प्रकृति और आत्मतत्त्व में भेद है; जड़ प्रकृति में जीवात्मा के समान चेतना नहीं होती। चेतना परम एवं शाश्वत् है; इसलिए चेतना की उत्पत्ति कभी जड़ तत्त्वों के संघात से नहीं हो सकती।